गांधी-मार्ग

सितंबर- अक्तूबर 2024

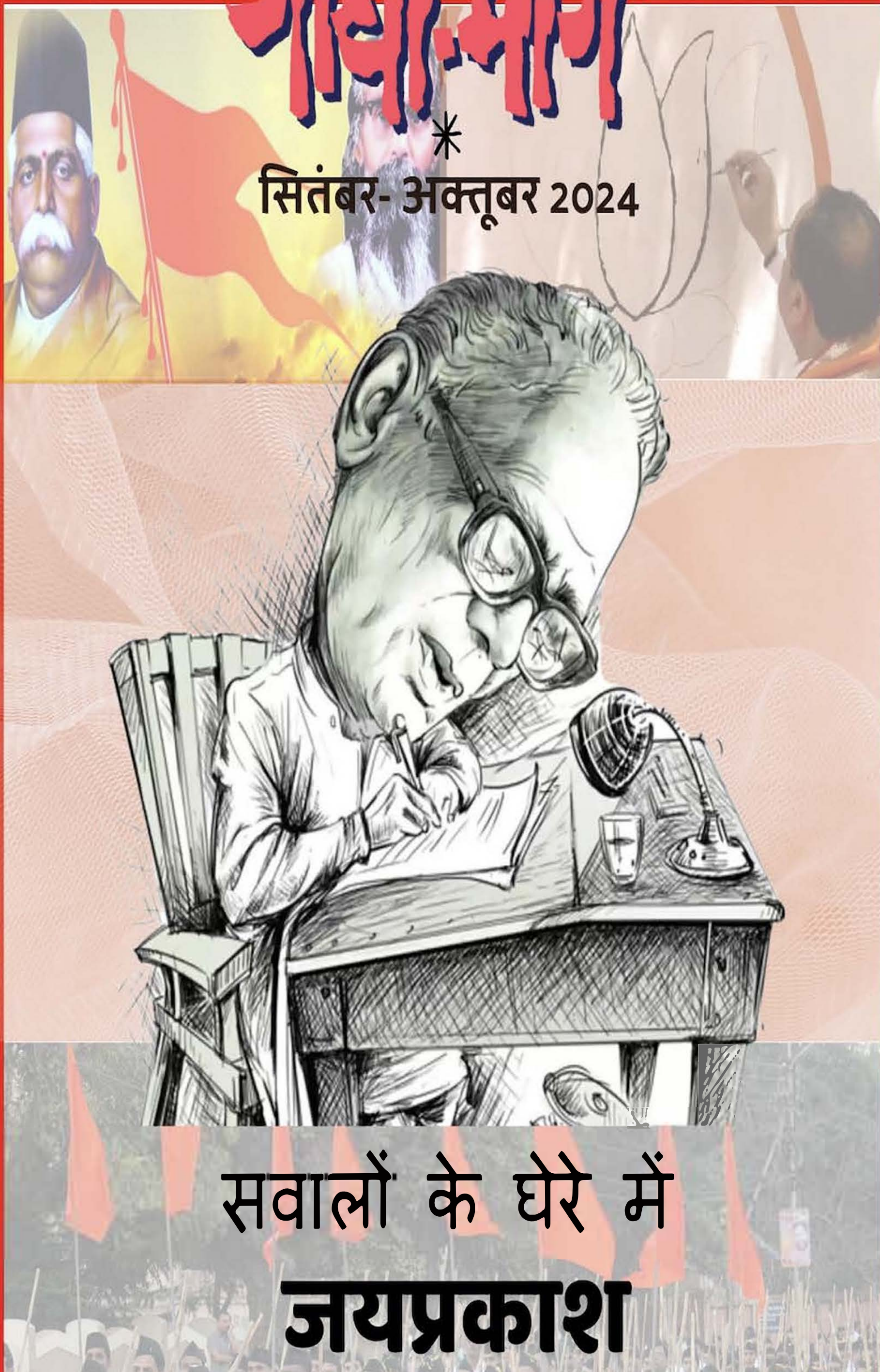

सवालों के घेरे में
जयप्रकाश

○ महात्मा गांधी ○ नोयम चोम्स्की ○ कुमार शुभमूर्ति ○ रवींद्र भारती ○ वंदना भारतीय

2023 में गांधी के लिए आपने क्या किया ?

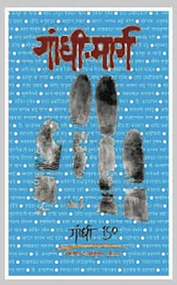

आता वर्ष 2024 पूछता है : गांधी के लिए आप क्या करेंगे ?

- ☐ हर माह 'गांधी-मार्ग' का 1 ग्राहक बनाया?
- ☐ 'गांधी-मार्ग' पढ़कर संपादक को अपनी राय लिखी?
- ☐ अपना 'गांधी-मार्ग' किसी दूसरे को पढ़ने के लिए दिया?

गांधी-मार्ग

सिर्फ पत्रिका नहीं, गांधी विचार का हथियार है!
ऊपर के तीन कदम चलिए, गांधी के सिपाही बनिए!!

गांधी मार्ग का वार्षिक शुल्क

भारत में एक वर्ष के लिए 200 रु., दो वर्ष के लिए 350 रु.
आजीवन 1000 रु. (व्यक्तिगत), 2000 रु. (संस्थागत)

ऑनलाइन भी आप शुल्क दे सकते हैं :
खाता संख्या : 0158101030392
(केनरा बैंक, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-2)
आईएफसी कोड : CNRB 0000158

गांधी-मार्ग

अहिंसा-संस्कृति का द्वैमासिक

वर्ष 66, अंक 5, सितंबर-अक्तूबर 2024

गांधी शांति प्रतिष्ठान

*

1. **दस्तावेज :** सत्य ही राम है, ...गॉड है	महात्मा गांधी	6
2. **संदर्भ 2 अक्तूबर :** अम्मा के गांधी	रवींद्र भारती	8
3. **नयी नजर :** एक बच्ची : एक बापू	रेवा बबेले	9
4. **विश्लेषण :** सवालों के घेरे में जयप्रकाश	कुमार शुभमूर्ति	17
5. **अभियान :** शांति के सिपाही चले...		33
6. **सुनो-सुनो :** आजादी चरखे से नहीं आई!		38
7. **शख्सियत :** यूसुफ मेहरअली	वंदना भारतीय	41
8. **संस्कृति :** बंद होती बातचीत	नंदिता मिश्र	48
9. **भावना :** मां शरीर में बहती है	गुलाब कोठारी	51
10. **टिप्पणियां/श्रद्धांजलि**		55
12. **पत्र**		63

आवरण : इतिहास के पन्नों पर हस्ताक्षर : जयप्रकाश के व्यक्तित्व व अवदान का यह रेखाचित्र 1975 में लंदन के 'द इकॉनमिस्ट' में तब प्रकाशित हुआ था जब हम आपातकाल से लड़ रहे थे. तब जयप्रकाश चंडीगढ़ अस्पताल के एक कमरे में नजरबंद थे, देश एक जेलखाने में बदल दिया गया था. सरकारी झूठ का बोलबाला था. तब कार्टूनिस्ट ने कल्पना की थी कि जयप्रकाश इतिहास को बदल भी रहे हैं और दर्ज भी कर रहे हैं.
आवारण सज्जा हमेशा की तरह **कीर्ति** ने की है.

वार्षिक शुल्क : भारत में 200 रुपये, दो वर्ष के 350 रुपये, आजीवन-1000 रुपये (व्यक्तिगत), 2000 रुपये (संस्थागत), एक प्रति का मूल्य 20 रुपये, डाक खर्च निःशुल्क. दो माह तक न मिलने पर शिकायत लिखें. अपना शुल्क चेक, बैंक ड्राफ्ट, मनीऑर्डर द्वारा 'गांधी शांति प्रतिष्ठान' के नाम भेजें. ऑनलाइन भुगतान के लिए केनरा बैंक खाता नं. 0158101030392 IFSC CODE : CNRB 0000158.

संपादन : कुमार प्रशांत **प्रबंध :** मनोज कुमार झा **प्रसार :** भगवान सिंह

गांधी शांति प्रतिष्ठान, 223 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 के लिए अशोक कुमार द्वारा प्रकाशित
फोन : 011-2323 7491, 2323 7493, **Email:** gmhindi@gmail.com

मुद्रक : नीता प्रेस, 3574- गली जटवारा, नियर सबलोक क्लीनिक, दरियागंज, दिल्ली-110002, फोन नं. 8800646548

शुरू में . . .

देश बदल गया है– लगातार! बात इतनी ही नहीं है कि किसी का बहुमत अल्पमत में बदल गया है हालांकि यह भी बड़े मार्के की बात है, लेकिन देश इस मानी में बदल रहा है कि यहां वह सब होने लगा है जिसके होने की हम कभी कल्पना भी नहीं कर पाते थे. मसलन एक यही बात देखिए कि कोई भी भारतीय भारत में कहीं भी आ-जा सकता है, बस सकता है, जीवन-व्यापार चला सकता है, संविधान में लिखी यह बात अब सच नहीं रही. अब भारत दो बन गया है : एक कुर्सी वाला भारत जिसके लिए कोई नियम-विधान नहीं है; दूसरा बिना कुर्सी वाला भारत जिसके लिए कोई नियम-विधान नहीं है. देश में संविधान है, दो सदनों वाली संसद है, कार्यपालिका है, और न्यायपालिका है. सब हैं और सबका बोझ जिसके कंधे पर है, वह जनता है. लेकिन इनमें से कोई इस जनता के लिए नहीं है. देश बदल गया है.

हमारी एक राजधानी है– दिल्ली, जहां दुनिया भर के सत्ताधीश, धनपति, कला-साहित्य-संस्कृति के महारथियों का आना-जाना लगा रहता है. सबके लिए रमन-चमन है. लेकिन देश की यह राजधानी भी उस जनता के लिए नहीं है जिसे कुछ कहना है, जिसकी कोई असहमति है, जो किसी बात से हैरान-परेशान है. जो बोलना-कहना-सुनाना-बताना चाहती है, उस जनता के लिए दिल्ली एक वर्जित क्षेत्र है. जैसे कंटीले तारों की बाड़ लगाकर सत्ता-साधन संपन्न लोग अपने घरों में किसी का भी प्रवेश वर्जित बना लेते हैं, दिल्ली ने जनता का प्रवेश वर्जित बना दिया है. आप किसान हैं तो दिल्ली नहीं आ सकते, आप आंदोलनकारी हैं तो दिल्ली नहीं आ सकते, आप भले स्वर्णपदक से विभूषित अंतरराष्ट्रीय ख्याति की पहलवान बेटियां हों, आप दिल्ली नहीं आ सकतीं. संक्षेप में कहूं तो आप जनता हो तो दिल्ली नहीं आ सकते. भीड़ हो तो आओ-जाओ, दिल्ली को फर्क नहीं पड़ता.

बात दिल्ली की कर रहा हूं लेकिन मशहूर जर्मन कवि बर्तोल्त ब्रेख्त की आवाज सुनाई दे रही है :

अखबार का हॉकर सड़क पर चिल्ला रहा था
कि सरकार ने जनता का विश्वास खो दिया है
अब कड़े परिश्रम, अनुशासन और दूरदर्शिता के अलावा

और कोई रास्ता नहीं बचा है
एक रास्ता और है कि
सरकार इस जनता को भंग कर दे
और अपने लिए चुन ले कोई नई जनता.

ऐसा होता तो लोकतंत्र कितना खुशनुमा होता!

इसी देश में दो और चेहरे भी हैं : एक चेहरा राहुल गांधी का है, तो दूसरा चेहरा सोनम वांगचुक का है, और इन दो चेहरों के बीच वे तमाम चेहरे हैं जो परिवर्तन की बात कहते-सुनते-गुनते दिखाई देते रहे हैं. राहुल गांधी उस राजनीतिक साहस का चेहरा हैं जो एकाधिकार के खिलाफ, अशिष्टता के खिलाफ, घृणा व संकीर्णता के खिलाफ आवाज उठाता है. ऐसा सब कहना-करना हमारी राजनीतिक संस्कृति में स्वीकृत नहीं रह गया है. पिछले दस सालों से अधिक से तो इन सारी बातों को चावल में से कंकड़ की तरह निकाल फेंका गया है. आज जो सत्ता की जितनी ऊंची कुर्सी पर बैठा है, वह उतना ही कुसंस्कारी, कायर, अशिष्ट व संकीर्ण है. राहुल अभी इससे अलग हैं. कब तक रहेंगे? राजनीति में किसी के 'एक्सपायरी डेट' का पता नहीं होता. लेकिन वक्ती जीत-हार को किनारे कर चल पड़ना, समाज को साहस भी देता है और आंख भी. राहुल आज ऐसे साहस का केंद्र बन गए हैं. यह पार्टी आदि से अलग व ऊपर की बात है. यह भी नया भारत ही है.

सोनम वांगचुक अपने कंधों पर लादकर जिस तरह लद्दाख को दिल्ली ले कर आए हैं, वह भी नया भारत है. पर्यावरण केवल हवा-पानी नहीं है. हवा-पानी में रहने वाले लोग भी, वे जिन व जैसी व्यवस्थाओं में रहते हैं वे व्यवस्थाएं भी, उनकी भाषा-बोलियां, पर्व-त्योहार, आशा-आकांक्षाएं भी पर्यावरण हैं. सोनम वांगचुक लद्दाखी हैं लेकिन सौ टंच भारतीय हैं. सही मानी में अल्पसंख्यक! वे जिस लद्दाख को दिल्ली लेकर आए हैं, उसमें देश के तमाम प्रदेशों के लोग सिमट आए हैं.

दिल्ली आने से पहले उन्होंने सत्याग्रह के बुनियादी शील के मुताबिक लद्दाख में तमाम तरह के आयोजन कर, सरकार, प्रशासन व समाज तीनों को बताया था कि वे सब क्या चाहते हैं. लद्दाख में शून्य से नीचे का तापमान, समुद्र से 3500 मीटर की ऊंचाई और 21 दिनों तक चलता रहा सोनम का उपवास! तब सारा लद्दाख वहां आ बैठा था, सारा देश उनको देख रहा था. लेकिन जिन्हें देखना-जागना-सुनना था, जिन्हें सोनम के साथ बैठकर आगे का रास्ता खोजना था, वे अपनी दिल्ली में कैद थे. यह सरकार जादू जानती है.

इसने लद्दाख को मणिपुर में बदल दिया. 21 दिनों का उपवास खत्म करते हुए सोनम ने कहा था : मैं फिर लौटूंगा!

वे लौटे ! इस बार उन्होंने लद्दाख के समग्र पर्यावरण को समेट लिया : दक्षिण लद्दाख में अंधे विकास का बुलडोजर दौड़ाया जा रहा है. कोमल पहाड़, तैरती हवा व पारदर्शी पानी वाला हमारा यह इलाका विकास के इस बुलडोजर से कांप रहा है, भयभीत हो रहा है, उजड़ रहा है. सोनम विनाश की यह आवाज लेकर दिल्ली आए. स्थानीय पर्यावरण के स्वभाव की समझ तथा उसकी जरूरत कुर्सी पर बैठने मात्र से नहीं आती है. कुर्सी इंसान की मूढ़ता का सबसे ठोस प्रतीक है. पर्यावरण की समझ आती है पर्यावरण को अपना मान कर छूने-देखने-दुलराने से तथा स्थानीय लोगों के साथ निरंतर संवाद करने से. समझ व सहमति के बिना विकास मूर्खता है, कायरता है और सत्ता की मनमानी है. दक्षिण लद्दाख का यह हाल है, तो उत्तर लद्दाख चीनी घुसपैठ से त्रस्त है. भले वहां न कोई घुसा था, न है, न होगा लेकिन वहां का नागरिक जीवन कठिनतर होता जा रहा है. इसलिए सोनम ने लद्दाख की पूरी एक तस्वीर देश के सामने रखी : लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा, छठी अनुसूची की हैसियत, लद्दाख में लेह व करगिल के दो संसदीय क्षेत्र– ऐसा होगा तब लद्दाख खड़ा हो सकेगा.

यही कहते सोनम वांगचुक लद्दाख से निकले और रास्ते भर अपनी बात कहते-समझाते दिल्ली के पास पहुंचे. लेकिन दिल्ली ने तो अपनी जनता के लिए अपने दरवाजे कब से बंद कर रखे हैं. इसलिए सोनम व उनके कुछ सैकड़ा साथी दिल्ली में प्रवेश से पहले ही पकड़कर विभिन्न थानों में बंद कर दिए गए. वे गांधी तक तो पहुंच गए हैं लेकिन राजघाट नहीं पहुंच सके, वे राजघाट पर फूल नहीं चढ़ा सके. राजघाट पर अब सताधीश व पुलिस, दो ही हैं जो निरापद पहुंच सकते हैं. यह भी नया भारत है. बड़ी सादी हंसी के साथ, उपवास पर बैठे सोनम ने कहा : “गांधी के रास्ते पर कांटे बहुत हैं.”

ऐसा ही है. रास्ते कांटों भरे ही होते हैं, क्योंकि वे नया आसमान खोजते हैं; सड़कों पर कांटे नहीं होते क्योंकि उनको कहीं पहुंचना नहीं होता है.

हम सबको अपना-अपना रास्ता चुन लेना चाहिए; उसे अपना भारत चुन लेना चाहिए तथा अपना-अपना भारत आबाद करने में जुट जाना चाहिए. जो भारत में नहीं, अपनी कुर्सियों पर, कुर्सियों के लिए रहते हैं, वे न तो भारत बना सकते हैं, न बचा सकते हैं.

कु.प्र.

*

सत्य ही
राम है, नारायण है, ईश्वर है, खुदा है, अल्लाह है, गॉड है

○ महात्मा गांधी

धर्म का इतना शोर करो कि उसके पीछे अधर्म भी चलता रह सके! यह दुनिया भर में चल रहा है. गांधी– आवाज लगाते हैं कि सत्य नहीं है, तो धर्म नहीं है. वे कहते हैं : चरखा नये धर्म का प्रतीक है

मुझे सर्वत्र चरखा-ही-चरखा दिखाई देता है; क्योंकि मुझे सर्वत्र निर्धनता दिखाई देती है. हिंदुस्तान के अस्थिपंजर-मात्र लोगों को जब तक अन्न-वस्त्र नहीं मिलता तब तक उनके लिए धर्म नाम की कोई चीज ही दुनिया में नहीं है. वे आज पशुवत् जीवन बिता रहे हैं और इसमें हमारा भी हाथ है. इसलिए चरखा हमारे लिए प्रायश्चितरूप है. अपंगों की सेवा करना धर्म है. भगवान हमें अपंगों के रूप में हमेशा दर्शन देते हैं; और हम नित्य तिलक-छापा लगाते हुए भी उनकी और ईश्वर की अवहेलना करते हैं. ईश्वर वेदों में है भी और नहीं भी है. जो वेदों का सीधा अर्थ करता है उसे उनमें ईश्वर की ज्योति दिखाई देती है और जो उनके शब्दों से चिपका रहता है उसे हम 'वेदिया' (पोथी-पंडित) कहते हैं. हां, नरसिंह मेहता ने माला की स्तुति बेशक की है; परंतु वहां वह उचित भी थी. उन्हीं मेहता शिरोमणि ने यह भी कहा है :

शुं थयुं तिलकने तुलसी धार्या थकी
शुं थयुं माल ग्रही नाम लीधे?
शुं थयुं वेद व्याकरण वाणी वद्ये
शुं थयुं वरणना भेद जाण्ये?

अवश्य ही मुसलमान 'तसबीह' फेरते हैं और ईसाई 'रोजरी', परंतु यदि किसी

को सांप काट खाए और वे 'तसबीह' या 'रोजरी' छोड़कर उसे मदद देने न जाएं तो वे अपने को धर्मभ्रष्ट मानेंगे. ब्राह्मण वेदों को पढ़कर ही धर्मगुरु नहीं हो जाते. यदि ऐसा होता तो वेदों के ज्ञाता मैक्समूलर भी हमारे धर्मगुरु हो जाते. वर्तमान युग-धर्म को जानने वाला ब्राह्मण वेदाध्ययन को गौण मानकर अवश्य ही चरखा-धर्म का प्रचार करेगा और करोड़ों क्षुधा-पीड़ितों की भूख मिटाने के बाद ही स्वाध्याय में रत होगा.

मैंने चरखा चलाना सांप्रदायिक धर्मों से श्रेष्ठ माना है. इसका अर्थ यह नहीं है कि संप्रदाय छोड़ दिए जाएं. परंतु जिस धर्म का पालन हर संप्रदाय और हर धर्म के अनुयायियों के लिए लाजिमी है, वह तमाम संप्रदायों और धर्मों से अवश्य श्रेष्ठ होगा; इसलिए मैं कहता हूं कि जो ब्राह्मण सेवा-भाव से चरखा चलाता है वह अधिक अच्छा ब्राह्मण; वह मुसलमान, अधिक अच्छा मुसलमान; और वह वैष्णव, अधिक अच्छा वैष्णव बनता है.

मैं सेवा-धर्म का पालन किए बिना अहिंसा धर्म का पालन नहीं कर सकता; और मैं अहिंसा धर्म का पालन किए बिना सत्य की खोज नहीं कर सकता

किंतु जब मैं इतना एकाग्र हो जाता हूं कि मुझे माला विघ्नरूप मालूम होती है तब मैं उसे छोड़ देता हूं. यदि मैं सोते-सोते चरखा चला सकूं और मुझे रामनाम लेने में उसकी सहायता की जरूरत मालूम हो तो मैं अवश्य माला के बजाय चरखा ही चलाऊं. यदि मुझमें माला और चरखा दोनों को फेरने का सामर्थ्य हो और मुझे दोनों में किसी एक को चुनना हो तो जब तक देश गरीबी और फाकाकशी से पीड़ित है तब तक मैं चरखारूपी माला फेरना ही पसंद करूंगा. मैं ऐसे समय की प्रतीक्षा में हूं जब मुझे रामनाम का जप करना भी उपाधिरूप मालूम होने लगे. जब यह अनुभव होगा कि 'राम' वाणी से भी परे है तब 'नाम' लेने की जरूरत ही न रह जाएगी. चरखा, माला और राम नाम— ये मेरे लिए जुदा-जुदा चीजें नहीं हैं. मुझे तो ये तीनों ही सेवा-धर्म की शिक्षा देते हैं. मैं सेवा-धर्म का पालन किए बिना अहिंसा धर्म का पालन नहीं कर सकता; और मैं अहिंसा धर्म का पालन किए बिना सत्य की खोज नहीं कर सकता. सत्य के सिवा धर्म नहीं. सत्य ही राम है, नारायण है, ईश्वर है, खुदा है, अल्लाह है, गॉड है.

(14.8.1924, पृष्ठ 552-555, खंड-24, गांधी वाङ्मय)

*

संदर्भ : 2 अक्तूबर

अम्मा के गांधी

○ रवींद्र भारती

"अम्मा, एक-दो झूठ कोई झूठ नहीं!
अपने हित में कौन झूठ नहीं बोलता!
जैसा कहता हूं वैसा यदि कर दो—
बगल की जमीन अपनी हो जाएगी.
काहे का सत्य?
काहे की अंहिसा?
काहे का अपिरग्रह?
काहे का ब्रह्मचर्य?
यह ऐसा रोग है, जिसको लगा—
वह गद्दीनसीन से बुनकर हो गया.
गांधी की रट लगाना बंद करो
तुम नाहक डरती हो उस बूढ़े से
वह देखने थोड़े आ रहा है
विश्वास क्यों नहीं करती
उसे मरे जमाना बीता."

इतना सुनना था कि
अम्मा ने झटक दिए मेरे हाथ
कहने लगी कि किसने कहा
गांधीजी मर गए?
पिस्तौल-गोली से वे मरने वाले हैं!
भला उन्हें भी कोई मार सकता है?
कितनी बार अंग्रेजों ने उन्हें
रेल की इंजन में झोंका दहकते आग के बीच
मगर हर बार वे साबुत बच गए.
वह क्या है बेटा, मैं झूठ न बोलूंगी
हकमारी का तुम्हारे करूंगी प्रतिरोध
ऐसा नहीं करने पर उन्हें बहुत दुख होगा.

कोई युक्ति काम नहीं आई
अपनी जगह अविचल रही अम्मा
बुद्धि, ज्ञान के कितने शस्त्र चलाए हमने
किंतु अम्मा ने ही जाते-जाते
मृत गांधी को मेरे भीतर जीवित कर दिया.

*